**ओ३म्**

**‘वेद ही अपौरुषेय एवं सच्चा विश्व धर्म ग्रन्थ’**

**-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

 यह सर्वमान्य तथ्य है कि चार वेद, ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेदख् ही संसार के सबसे प्राचीन धर्म ग्रन्थ वा पुस्तकें हैं। वेद ही संसार के प्रमुख व सत्य धर्म ग्रन्थ हैं, इसकी एक कसौटी यह है कि वेद में ईश्वर को अनेक गुणों एवं विशेषणों सहित सच्चिदानन्द, सर्वज्ञ, अनादि, नित्य, निराकार और सर्वव्यापक बताया गया है। संसार में जितने मत, पन्थ, सम्प्रदाय आदि प्रचलित हैं वह सब प्रायः ईश्वर को एकदेशी, स्थान विशेष पर रहने वाला ही स्वीकार करते हैं जबकि वैदिक धर्म उनसे करोड़ों व अरबों वर्ष पूर्व उत्पन्न होने पर भी ईश्वर को निराकार एवं सर्वव्यापक मानते हैं। वेद में न तो अवतारवाद है और न किसी के ईश्वर पुत्र व सन्देश वाहक होने का सिद्धान्त।

आज का युग ज्ञान विज्ञान का युग है। यह समस्त संसार वा ब्रह्माण्ड ईश्वर की रचना है। इस संसार की रचना किसी एकदेशी सत्ता से हुई कदापि नहीं हो सकती। इसे तो कोई निराकार, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, अजन्मा, सर्वव्यापक व सर्वान्तर्यामी सत्ता ही बना सकती है। आज ब्रह्माण्ड का जितना विस्तृत ज्ञान है उतना आज से हजार या दो-तीन हजार वर्ष पूर्व नहीं था। तब किसी को यह पता भी नहीं था कि इस ब्रह्माण्ड में अनन्त सूर्य, अनन्त पृथिव्यां व सौर मण्डल हैं जिनका परिमाण हर प्रकार से अनन्त है। वेदों में इसका ऐसा ही वर्णन है जबकि अन्य किसी धर्म व पंथ के धर्मग्रन्थ में वेदों के समान सत्य व यथार्थ वर्णन नहीं है। इसी कारण वेद पूर्ण सत्य ग्रन्थ हैं और ईश्वरीय ज्ञान सिद्ध होते हैं क्योंकि किसी मनुष्य या मनुष्य समुदाय की यह क्षमता नहीं कि वह संसार की समस्त सत्य विद्याओं का एक ग्रन्थ बना सके। वेद और ईश्वर विषयक सत्य व यथार्थ ज्ञान के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का सत्यार्थ प्रकाश व अन्य अनेक ग्रन्थ मार्गदर्शक हंै जिनका अध्ययन कर एक साधारण व्यक्ति भी सृष्टि के यथार्थ रहस्यों को जान सकता है। अन्य किसी ग्रन्थ वह ज्ञान प्राप्त नहीं होता जो कि सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ व अन्य ऋषि ग्रन्थों से होता है।

वेदों में न केवल एक ईश्वर जो कि निराकार व सर्वव्यापक है, शरीर व नस नाड़ी के बन्धन से रहित है, ऐसे स्वरूप वाले ईश्वर का निश्चयात्मक वर्णन है। वेद जैसा ईश्वर व सृष्टि के रहस्यों का वर्णन संसार के किसी मत-पन्थ के ग्रन्थ में उपलब्ध नहीं है। अतः वेद अपौरुषेय ग्रन्थ सिद्ध हैं। न केवल ईश्वर का सत्य स्वरूप ही वेदों में वर्णित है अपितु जीवात्मा और सृष्टि का सत्यस्वरूप भी वेद व उनके व्याख्याग्रन्थों में वर्णित है। वेदों की सच्ची व मोक्ष लाभ कराने वाली ईश्वर की उपासना का ज्ञान व विज्ञान भी वेदों से ही प्राप्त होता है। अतः वेद संसार के सभी मनुष्यों के एकमात्र धर्म ग्रन्थ सिद्ध हैं। महाभारत काल तक वेद ही पूरी सृष्टि के सर्वमान्य धर्म ग्रन्थ रहे हैं और अनुमान से कह सकते हैं कि ज्ञान विज्ञान की वृद्धि के इस युग में आने वाले समय में वेद ही समस्त संसार के एकमात्र धर्मग्रन्थ होंगे। वेदों के वह सभी व्याख्याग्रन्थ जो पूर्णतः वेदानुकूल हैं, वही भविष्य में सर्वत्र स्वीकार्य होंगे। इसका यह प्रमाण है कि सूर्य को ग्रहण अवश्य लगता है परन्तु वह स्थाई नहीं होता। कुछ ही समय में सूर्य ग्रहण समाप्त हो जाता है। इसी प्रकार वेद सूर्य पर महाभारत काल व उसके बाद से कुछ समय के लिये जो ग्रहण लगा है वह आने वाले समय में छंट जायेगा और पश्चात् वेद सूर्य की भांति अपनी पूरी आभा व तेज के साथ पूरे विश्व में अपनी ज्ञान की किरणों से सुलभ होगा। संसार में एक सर्वव्यापक ईश्वर के होते हुए यह संसार अधिक समय तक अज्ञानी व अविद्याग्रस्त नहीं रह सकता। रात्रि की समाप्ती होती है और उसके बाद प्रातः अवश्य आती है। वर्तमान अर्धरात्रि का काल भी शीघ्र ही अवश्य समाप्त होगा, ऐसी आशा सभी आस्तिक बन्धुओं को रखनी चाहिये। इत्योम् शम्।

**-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**

**ओ३म्**

**‘हिन्दू समाज का प्रमुख रोग जातिभेद’**

**-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

श्री सन्तराम, बी.ए. आर्यसमाज के उच्च कोटि के विचारक एवं जातिभेद विषय के अधिकारिक विद्वान थे। आप ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज के भक्त होने के साथ स्वामी श्रद्धानन्द जी के भक्त व सहयोगी थे। आपने अनेक ग्रन्थ लिखे हैं जिनमें से एक **‘हमारा समाज’** नामक ग्रन्थ भी है। 282 पृष्ठीय इस ग्रन्थ के तृतीय संस्करण का प्रकाशन सन् 1987 में होशियारपुर के विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान ने किया है। इससे पूर्व सन् 1948 व 1957 में भी इस ग्रन्थ के दो संस्करण प्रकाशित हुए थे। इस पुस्तक को श्री सन्तराम जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी को समर्पित किया है। समर्पण करते हुए उन्होंने जो शब्द लिखे हैं वह हैं **‘अपने युग के सब से पहले और सब से बड़े जात- पांत-तोड़क महात्मा मुन्शीराम जी-स्वामी श्रद्धानन्द जी-की सेवा में—सन्तराम’।** इस पुस्तक के पृष्ठ 7 से एक पैरा प्रस्तुत कर रहे हैं जिसमें जाति भेद का उल्लेख करते हुए वह कुछ महत्वपूर्ण बातें लिखते हैं।

वह लिखते हैं कि **‘(आर्यों व हिन्दुओं में) फूट और उपद्रव का कारण उतना धर्म या संप्रदाय नहीं जितना कि जातिभेद है। सिख ब्राह्मण, पौराणिक ब्राह्मण, आर्यसमाजी ब्राह्मण और देवसमाजी ब्राह्मण विविध धर्म-विश्वास रखते हुए भी एक दूसरे को आत्मीय समझते हैं, क्योंकि उनका परस्पर बेटी-व्यवहार (परिवारों के बीच विवाह सम्बन्ध) होता है। इसके विपरीत एक नाई आर्यसमाजी और दूसरा बनिया आर्यसमाजी धर्म-विश्वास से एक होते हुए भी आपस में बन्धुभाव का अनुभव नहीं करते, क्योंकि जातिभेद के कारण उनका आपस में बेटी-व्यवहार (विवाह-सम्बन्ध) नही। यदि जाति-भेद का पचड़ा न हो तो घर में कुरान और मुहम्मद का मानने वाला भी उसी प्रकार मुहम्मदी हिन्दू रह सके जैसे मूर्तिपूजक, निराकारवादी, शैव और शाक्त आदि सब हिन्दू हैं। देखिए, अकबर से लेकर औरंगजेब वरन् बहादुरशाह तक किसी भी मुगल सम्राट् का ख्षतना नहीं हुआ था। फिर भी वे मुसलमान कहलाते थे। मुगल वंश में यह अन्धविश्वास फैल रहा था कि खतना कराने से उनका राज्य नष्ट हो जाएगा। हुमायूं का खतना हुआ था, इसलिए उसे मारा-मारा फिरना पड़ा। मुगल-वंश में सबसे पहले बहादुरशाह के बड़े बेटे फखरुद्दीन का खतना हुआ था। इसके झट ही बाद सन् 1857 के विद्रोह में बहादुरशाह पकड़ा जाकर रंगून भेज दिया गया। इसी प्रकार शोलापुर की साली, लिंगायत और विष्णोई आदि अनेक जातियां अपने शव जलाती नहीं, गाड़ती हैं। फिर भी वे हिन्दू हैं। भारत की राष्ट्रीय एकता में हिन्दू सभा और मुसलिम लीग जैसी साम्प्रदायिक संस्थाएं उतनी बाधक नहीं, जितनी कि ब्राह्मण सभा, जाट सभा, और अग्रवाल सभा जैसी जाति-बिरादरी की सभाएं बाधक हैं।’**

यह दुःख की बात है कि हिन्दुओं व आर्यसमाज के विद्वान तथा नेता इस जातिभेद रूपी महारोग के उपचार के विषय में कभी विचार नहीं करते। यह महारोग हमारे देश व समाज में न केवल बना हुआ है अपितु बढ़ता भी जा रहा है जिसके अनेक दुष्परिणाम समाज के समाने हैं। ऋषि दयानन्द और स्वामी श्रद्धानन्द जी ने इस रोग को दूर करने का प्रयास किया परन्तु वह पूर्ण सफल नहीं हुए। आज इस जातिभेद रूपी महारोग के उन्मूलन की हिन्दू और आर्य समाज को सर्वाधिक आवश्यकता है। मत व धर्म भेद के कारण भारत का विभाजन हुआ था तथापि वही समस्यायें आज भी उपस्थित हैं। जातिभेद के कारण देश की स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद अनेक दलित व पिछड़ी जातियों को आरक्षण देना पड़ा। आज भी आरक्षण पर अनेक प्रकार के बयान आते रहते हैं जिससे समाज व देश कमजोर हो रहा है। पिछले दिनों हम हरयाणा व गुजरात के जातिगत आन्दोलनों को देख ही चुके हैं। यह व ऐसे अन्य आन्दोलन फिर कब अपना सिर उठा लें, किसी को पता नहीं। आर्यसमाज ने गुण, कर्म व स्वभाव पर आधारित जिस वैदिक वर्णव्यवस्था का प्रचार किया था उसे भी देश व समाज समझ नहीं सका और वह भी आज एक प्रकार से हाशिये पर पड़ी है। हमें लगता है कि वेद प्रचार ही देश व समाज की सब समस्याओं का कारगर उपाय है। इसी से सब मत-मतान्तर व जातिभेद समाप्त होगा और सत्य मानव धर्म प्रतिष्ठित होगा। आर्यसमाज को **वेदाज्ञा और ऋषि आज्ञा** **‘‘वेद प्रचार”** पर ही स्वयं को केन्द्रित रखना चाहिये। यही विश्व में सच्ची मानवता स्थापित करने का एकमात्र उपाय है। इत्योम् शम्।

**-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**

**ओ३म्**

**‘ऋषि दयानंद की वेदार्थ को देन पर महात्मा हंसराज जी के स्तुत्य विचार’**

**-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

 महर्षि दयानन्द (1825-1883) ने अपने समय 1863-1883 में देश व संसार के लोगों को वेदों के यथार्थ व सच्चे अर्थ बताये थे। उनके समय में देश के लोग वेदों के यथार्थ अर्थ नहीं जानते थे। इस कारण वह वेदों से कोई लाभ भी नहीं उठा सकते थे। वेदों के न जानने के कारण महाभारत काल के बाद लगभग 200 पीढ़िया वेदज्ञान उपलब्ध न होने के कारण ईश्वरोपासना व सच्चे मनुष्य जीवन का निर्वाह कैसे किया जाता है, को जानने व व्यतीत करने में विफल रहीं। महर्षि दयानन्द ने अपना जीवन अपने देश व संसार के लोगों के लिए तप व पुरुषार्थ पूर्वक विद्यार्जन कर उससे प्राप्त अमृतमय ज्ञान को हमें अपनी दया व प्रेम के कारण प्रदान किया है। हम व सारा संसार उनसे प्राप्त ज्ञान के लिए उनका ऋणी है। हमें वेद मार्ग पर चलना है और अन्यों को भी इस मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करना है। वेद और दर्शनों से ही हमें यह ज्ञान होता है कि हमारा यह जीवन धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की सिद्धि को प्राप्त करने के लिए हमें ईश्वर से मिला है। महात्मा हंसराज जी ऋषि दयानन्द के भक्त, पवित्र एवं परोपकारी आत्मा थे। आपने ऋषि दयानन्द और उनके दर्शन से प्रेरणा ग्रहण कर अपना सारा जीवन लोकोपकार वा संसार से अविद्या को दूर करने व समाज सेवा में समर्पित किया। आज इस संक्षिप्त लेख में हम ‘वेदों के सच्चे अर्थ किसने बताए?’ शीर्षक से लिखे उनके विचारों को प्रस्तुत कर रहे हैं।

महात्मा जी कहते हैं ‘महर्षि वेद व्यास के पश्चात् ऋषि दयानन्द जी ही ऐसे महापुरुष हुए हैं, जिन्होंने वेदों के सच्चे अर्थ प्रकाशित करके लोगों को धर्म का मार्ग बताया। उनके शुभागमन से पूर्व लोग यह समझते थे कि वेदों में अग्नि, इन्द्र, वायु आदि जो नाम हैं, वे (ईश्वर से पृथक) विभिन्न देवताओं के हैं, परन्तु ऋषि दयानन्द ने प्राचीन ग्रन्थों (निरुक्त आदि) के प्रमाणों से सिद्ध कर दिया कि यद्यपि ये नाम भौतिक अर्थात् सांसारिक पदार्थों के भी हैं, परन्तु वास्तव में मुख्य रूप से परमात्मा के नाम हैं। महर्षि वेदव्यास ने अपने शारीरिक सूत्र (ग्रन्थ) में लिखा था कि प्राण एवं आकाश आदि नाम परमात्मा के भी नाम हैं। पण्डित महर्षि वेदव्यास के वचनों को पढ़ते थे, परन्तु जब वेदों में ये नाम आते थे तो उनके अर्थ भौतिक पदार्थ किंवा देवता विशेष करते थे। संस्कृतज्ञों के मस्तिष्क में यह विचार नहीं आता था कि इन शब्दों का अर्थ परमात्मा भी करना चाहिए।

यह Credit (श्रेय) केवल ऋषि दयानन्द को ही जाता है कि उन्होंने इस प्रकार के शब्दों के पारमार्थिक (ईश्वर परक) अर्थ करके वेदों के वास्तविक अर्थों पर भी प्रकाश डाला। इस चाबी ने, जो ऋषि ने हमारे हाथों में दे दी है, ऊंचे-से-ऊंचा ज्ञान और विज्ञान वेदों का हमारे सम्मुख खोलकर रख दिया। हम बड़ी नम्रता और प्रेम से अपना शीष उस ऋषि के चरणों में निवाते हैं जिन्होंने वेदों के सम्बन्ध में यह प्रकाश हमें दिया है।’

महात्मा हंसराज जी ने अपनी उपर्युक्त पंक्तियों में ऋषि का सही मूल्याकंन किया है। महात्मा जी के जीवन की यह विशेषता है कि उन्होंने महर्षि दयानन्द जी के जीवन व उनके ग्रन्थों से प्रेरणा ग्रहण कर उनके प्रायः सभी सिद्धान्तों व शिक्षओं का अपने जीवन में निर्वाह किया था। वह एक प्रकार से जीवित शहीद थे जो एक दीपक की भांति तिल तिल कर जले थे और और अपने प्रकाश से देश व समाज को आलोकित और प्रकाशित किया। इसी के साथ इस संक्षिप्त लेख को विराम देते हैं। इत्योम् शम्।

**-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**